ISSN No. 2394-9996

हिन्दी कहानी और मानव मूल्य

दीपक कुमार
शोध छात्र
स्वामी रमानन्द तीर्थ मराठवाडा
विश्वविद्यालय, नांदेड (महाराष्ट्र)

प्रस्ताविक :-

हिन्दी कहानी के प्रारम्भिक दौर में चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी `उसने कहा था` से कहानी का प्रारम्भ माना जाता है। उपन्यास के उपरान्त कहानी विधा ने ही मानव अनुभव के सामाजिक तथा ऐतिहासिक आयाम से सीधा जुड़ने का प्रयास किया है। यथार्थ को उसकी विविधता, मूर्तता और संश्लिएटता में चित्रित करने का प्रयास कहानीकारों द्वारा किया गया है। कहानी एक ऐसे आदर्श का प्रतीक है जो काल और देश से परे प्रत्येक मानव के लिए समान रूप से प्रेरणादायक है। कहानी विधा ने अपनी विकास यात्रा की अल्प कालावधि में सृजन के विभिन्न आयामों को स्पर्श किया है। चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने संवेदना तथा सामाजिक यथार्थ का द्वन्द्व तीखे् रूप में समाज के सामने प्रस्तुत किया है। इस कहानी (उसने कहा था) का पात्र लहनासिंह किसानी जीवन और उस व्यवहार का प्रतीक है, जहाँ योजना बद्धता और भविष्योन्मुखता का नितान्त अभाव होता है। व्यक्ति मात्र वर्तमान की समस्याओं से जूझता हुआ उदासीन तथा निष्क्रियता धर्मी जीवनयापन करता है इसी के परिणाम सवरूप मनोस्थिति के द्वन्द्व बहुत ही तीखे तथा अतिवादी होते हैं।

`उसने कहा था` कहानी सृजन की उत्कृष्ठता का एक महत्वपूर्ण कीर्तिमान स्थापित करती है। नाट्यात्मकता के कारण यह कहानी अपने रूप में प्राय: वस्तुपरक ही रहती है। इसमें लेखक ने पिसते हुए छोटे किसान के दृष्टिकोण तथा संस्कारों को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्ति प्रदान की है। कृषक मानव शोषण और युद्ध के विध्वंस को ही प्रकति की अनिवार्य नियति स्वीकार करता है। एक विशेष बात यह है कि इसमें संवेदनागत किसान सुलभ संस्कार केवल अति भावुक रूप में ही कहीं-कहीं प्रकट होते दिखाई देते हैं। `उसने कहा था` रचना निस्संदेह ही कहानी धारा के प्रारम्भिक दौर में लिखी जाने के कारण हिन्दी कथा लेखन की

महत्वपूर्ण उपलब्धि कही जा सकती है। इसमें एक असहाय नारी की प्रार्थना है। इसके अतिरिक्त यह कहानी वर्ग-संस्कारों के बीच में विद्यमान द्वन्द्व की ओर भी संकेत करती है। यह पूँजीवादी व्यवस्था पर करारी चोट करती है। साम्राजयवाद के मध्य ऐतिहासिक अंतर्विरोध के विकास के संदर्भ में समाज के केंन्द्रीय प्रश्नों से भी जूझती हुई नजर आती है `उसने कहा था।`

गुलेरी, प्रेमचन्द, यशपाल, जैनेन्द्र, पाण्डेय बेचन शर्मा `उग्र` राहुल सांकृत्यायन, हीरानन्द वात्सायत अज्ञेय, नागार्जुन, भैरव प्रसाद गुप्त, अमृतलाल नागर तथा भीष्म साहनी आदि ऐसे कहानीकार हैं जो कहानी साहित्य के प्रणेता हैं तथा राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़े मूर्धन्य साहित्यकार भी हैं। प्रेमचन्द जी की कफन कहानी सामाजिक जागरूकता और पक्षधरता को स्पष्ट करती है। जैसे — ``लकड़ी तो उसे जलाने के लिए मिल गई है, क्यों माधव?``

माधव बोला - ``हाँ लकड़ी तो बहुत हैं, अब कफन चाहिए ------- तो चलो हल्का - सा कफन ले लें ---- रात को कफन कौन देखता है? फिर कफन लाश के साथ जल ही तो जाता है।``[1]

माधव की पत्नी जब प्रसव - पीड़ा से रात में छटपटाती है, तो माधव और उसका बाप घीसू आराम से मजे में भुने आलू का स्वाद लेते रहते हैं। रात भर तड़पकर माधव की पत्नी सुबह होते - होते अन्तिम सॉस ले लेती है, तब प्रातःकाल होने पर वह दोनों शराबी पिता - पुत्र दाह संस्कार के नैतिक दबाव के बलपर कफन के लिए लोगों से चन्दा इकट्ठा करने में सफल हो जाते हैं। प्रेमचन्द ने सामाजिक यथार्थ के द्वन्दों की ओर संकेत करके समाज और मानव को यह चेतावनी दी है कि शोषण और असमानता पर आधारित सामाजिक क्रिया, संस्कृति और अत्यन्त दूषित चिन्तन व्यक्ति को अमानवीय बना देते हैं। रचना और जीवन के मध्य भेद की व्याख्या करते हुए लुकाव का कथन है कि - ``जीवन निरन्तरता में बहता चलता है, सामान्य और असामान्य, आवश्यक और अनावश्यक को एक साथ लिये रहता है, और प्रायः किसी विशिष्ट अर्थवत्ता से नियंत्रित या निर्देशित नहीं रहता है।``[2] जीवन एक व्यापक ऐतिहासिक प्रक्रिया है जिसमें सार्थकता उसकी व्यापकता का एक हिस्सा भर होती है, जबकि रचना एक काल विशेष में जीने वाले लेखक की एक सोद्देश्य और सार्थक अभिव्यक्ति होती है।

वास्तविकता तो यह है कि कथा-मूल्य को उस कथा धारा की निरन्तरता से जोड़कर देखना चाहिए जो समाज में एक मूर्त और ठोस शक्ल के रूप में विद्यमान रहती है। सृजनशीलता, परिवेश, राजनीति विरोधी और समर्थक पक्षों की वास्तविक स्थिति आदि के पारस्परिक सम्बन्धों को ठीक प्रकार से पहचानना बड़ा ही मुश्किल

है। इसका परिणाम यह है कि वर्तमान समय में मानव मूल्यों को लेकर रचनाकारों, आलोचकों तथा पाठकों के मध्य अनेकानेक मतभेद रहते हैं।

हमारे मन में हलचल मचती है कि आधुनिक कथा साहित्य के बारे में एक समस्या उत्पन्न होती है कि उसे भूतकाल की परम्परा से कैसे पृथक किया जाये? जिस कालखण्ड को हम इतिहास में या राष्ट्रीय आन्दोलन में समावेशित मानते हैं, वही वास्तव में ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न कर देता है कि बाकी साहित्य रूपों और विधाओं से टक्कर लेती हुई कथा - लेखन के उभार की सशक्त प्रक्रिया जन्म ले लेती है। बीसवीं सदी में तेजी से उभरने वाले राष्ट्रीय आन्दोलन से कुछ साहित्य मनीषी इस तरह जुड़े हैं कि उस पृष्ठभूमि को समझे बिना इनकी रचनाशीलता की पहचान कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव दृष्टिगोचर होती है। राष्ट्रीय आन्दोलन पिछड़े समाज को राजनितिक रूप से एकबद्ध करता हुआ ब्रिटिश साम्राज्यवाद के समक्ष एक तीखी और तीव्र चुनौती बन गया था। आनंद प्रकाश दीक्षित का कथन है कि - ``गाँधी की सफलता का आधार भारत का वह किसान और मध्यवर्ग था, जो बाहरी ताकत के विरूद्ध अपनी पूरी शक्ति और गरिमा के साथ खड़ा हुआ था। इसी किसान जीवन में सामाजिक संघर्ष के दौरान पैदा होने वाली ऊर्जा तथा अपील ने गाँधी के नेतृत्व को व्यापकता प्रदान की। राजनीतिक नेता और सामाजिक कार्यकर्ता से ऊपर उठकर गाँधी एक चरित नायक के रूप में उभरे और साहित्यिक कृतियों का विषय बने। गाँधी के राजनीतिक परिप्रेक्ष्य की व्यापक मानवीयता ने पूरे समाज में जिस मूल्य-चेतना का संचार किया वह आज भी साहित्य रचना के लिए प्रेरणा की वस्तु है।''[3]

``स्वतन्त्रता के पश्चात हिन्दी का पहला महत्वपूर्ण पड़ाव नयी कहानी आन्दोलन के रूप में नजर आता है।''[4] आजादी के बाद का भारत उस मानवीय परम्परा के विकास के लिए आसान पृष्ठभूमि नहीं है, जिसकी शुरूआत पहले हो चुकी है। आजादी के बाद का व्यापक सामाजिक यथार्थ उस आदर्शशीलता, भावुकता और नर्म सोच से पूरी तरह से पकड़ में नहीं आ सकता हैं। ``मानव मूल्यों की वास्तविक परिणति का स्वरूप कमोवेश उस वक्त के विकासवादी बुजूर्ग वर्ग की व्यापक समझ में समझैता और संघर्ष करता नजर आता है तथा इस तरह कमोवेश उसकी केन्द्रीय प्रकृति से प्रभावित - अनुशासित होता है।''[5]

साहित्य का पाठक नयी कहानी पर आधारित रचनाओं का अध्ययन करके अपने व्यापक-परिवेश से दूर होने लगता है। वह अधिक से अधिक उस एक मात्र अहसास का वाहक बन जाता है जो लेखक ने कहानी में प्रस्तुत किया है। अनुभव की त्रासदी मध्यवर्गीय जीवन की त्रासदी हो या न हो परन्तु उस संवेदन की

त्रासदी आवश्य बन जाती हैं, जिसके लिए विचार और चिंतन समाज के विभिन्न पक्षों के अंत: सम्बन्ध, इतिहास के बीच विकास के लिए संघर्षरत व्यापक मानवीय चेतना आदि साहित्येत्तर वस्तुएँ हैं।

निष्कर्ष

हिन्दी कहानी का कलेवर मानव के हित में होना अति आवश्यक है। वर्तमान समय में कुछ लेखक कहानी के धरातल को केवल अपनी निजी जिन्दगी तक ही सीमित कर रहे हैं। मेरा स्पष्ट मत यह है कि यह मानव मूल्य के कतई हक में नहीं है। अर्थपरक व्यापकता के जीवन में आज केवल अपने को देखा जा रहा है। मानवता का गला घोंट कर येन-केन प्रकारेण धन अर्जित करने की होड़ मची हुई है। मेरा विचार यह है कि क्या ऐसी स्थिति में व्यापक मानव मूल्य का कहीं लेशमात्र भी समावेश हो सकता हैं? प्रश्न विचारणीय है। कहानी ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण साहित्य का लेखन मानव के हक में होना नितान्त आवश्यक है।

संदर्भ सूची -

1) हिन्दी कहानी की विकास - प्रक्रिया - आनंद प्रकाश, पृ. 22
2) वही, पृ. 51
3) वही, पृ. 115
4) वही, पृ. 116
5) वही, पृ. 117